शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक ३ : नई दिल्ली : १४-२० अप्रेल २०१७

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि श्रमणियां बिहार प्रान्त में सानंद अहिंसा यात्रा करते हुए गतिमान हैं। गत सप्ताह आचार्यप्रवर ने जैन एवं बौद्ध धर्म से संबंधित अनेक ऐतिहासिक स्थलों में भ्रमण किया। आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में पावापुरी भगवान महावीर की निर्वाण भूमि में महावीर जयंती का भव्य आयोजन हुआ। आगामी २९ अप्रेल को भागलपुर में अक्षय तृतीया का आयोजन होगा। तदुपरान्त आचार्यप्रवर कोलकाता की ओर प्रस्थान करेंगे।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण बिहार राज्य में

पाटलिपुत्र में पावन प्रवेश

३१ मार्च। पटना जंक्शन का चार दिवसीय प्रवास संपन्न कर परम पूज्य आचार्यप्रवर ने पटना सिटी से प्रस्थान किया। आकाश में मंडरा रहे बादलों और कुछ वेग के साथ बह रही हवा के कारण आज का मौसम शीतलता लिए हुए था। हवा के साथ पानी की हल्की बौछारें भी पूज्यप्रवर के तन का स्पर्श कर रही थी। राजा मौर्य के नगर पाटलिपुत्र (पटना सिटी) में पूज्यप्रवर का पावन प्रवेश पटनासिटीवासियों के उल्लास को चरम पर ले जाने वाला था। आचार्यप्रवर के पदार्पण से न केवल स्थानीय तेरापंथ समाज, अपितु अन्य जैन एवं जैनेतर समाज में भी उल्लासमय वातावरण था। यद्यपि यहां के भौतिक विकास को देखकर इसे प्राचीन नगरी के रूप में जान पाना कठिन है, किन्तु बताया जाता है कि यहां आज भी कोशा की चित्रशाला और सेठ सुदर्शन के सिंहासन के भग्नावशेष विद्यमान हैं। भव्य स्वागत जुलूस में अन्य जैन एवं जैनेतर समाज भी सोल्लास संभागी बना हुआ था। मार्ग के आसपास खड़े तथा घरों व दुकानों में स्थित लोग करबद्ध होकर पूज्यचरणों में अपनी भावाजंलि अर्पित कर रहे थे।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों के द्वारा मार्ग में यत्र-तत्र प्रस्तुत स्वच्छ भारत अभियान, भगवान महावीर का पारणा, रूपांजी का खोड़ा, अणुव्रत और नशामुक्ति से संबंधित झाकियां पूज्यप्रवर की दृष्टि का विषय बनीं। गुरुहट्टा मोड़ से प्रारम्भ हुआ भव्य स्वागत जुलूस पादर की हवेली, पानी की टंकी, खाजिया कला, मच्छरहट्टा, पटना सिटी चौक, गुरु गोविंदसिंह पथ होते हुए रामदेव महतो सामुदायिक भवन पहुंचा। पूज्यप्रवर का पटना सिटी में त्रिदिवसीय प्रवास यहीं हुआ। आज का विहार ८.२ किलोमीटर रहा।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी ने लोगों को अभिप्रेरित किया।

पटना के मेयर श्री अफजल इमाम ने कहा--'पटना सिटी की इस महान धरती पर आचार्यश्री महाश्रमणजी का मैं पटना के मेयर की हैसियत से तथा पटना की जनता की तरफ से अभिनन्दन करता हूं। आपकी इस यात्रा से पूरा राज्य और पूरा शहर अपने आप में गर्व का अनुभव कर रहा है। आप जो संदेश लेकर चल रहे हैं, पूरी दुनिया को उसकी जरूरत है। हिंसा के इस दौर में आपकी अहिंसा यात्रा इंसानियत के लिए बहुत बड़ा अध्याय है। दुनिया हमेशा आपके संदेश को आपके वरदान के रूप में याद रखेगी।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कर्त्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा प्रदान की तथा प्रसंगवश

कहा--'गुरु का कार्य है अंगुलिनिर्देश करना। अंगुलिनिर्देश के द्वारा गुरु मानों शिष्य को सक्षम बनाने का प्रयास करते हैं। कभी छोटे रूप में तो कभी बड़े रूप में और कभी कड़े रूप में अनुशास्ता अंगुलिनिर्देश कर सकते हैं। कभी मौके पर अंगुलि पकड़ कर भी ले जा सकते हैं। वे मानों किसी को पंगु बनाने का काम नहीं करते। वे तो सामने वाले को और स्वयं को सक्षम बनाने का प्रयास करें, यह उनका फर्ज होता है। एक पक्षी अपने बच्चे को उड़ना सिखाता है, उसे उड़ने में सक्षम बनाने का प्रयास करता है। जब तक वह सक्षम नहीं हो जाता, उसके मुंह में दाना डाल देता है। जब बच्चा सक्षम बन जाता है तो स्वयं अपना भोजन प्राप्त कर सकता है। अंगुलिनिर्देश करने वाले दूसरों को सक्षम बनाने का प्रयास करते हैं। न केवल धार्मिक जगत में, अपितु सामाजिक और राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में भी अंगुलिनिर्देश का महत्त्व होता है। जहां उचित लगे वहां अंगुलिनिर्देश करने का प्रयास यथावसर होना चाहिए। समाज को स्वस्थ रखना है तो जहां कहीं बीमारी की बात लगे, उसे दूर करने का प्रयास होना चाहिए।'

पूज्यप्रवर की प्रेरणा से पटना सिटी के लोगों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प स्वीकार किए। कार्यक्रम में पटना सिटी तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष श्री छत्तर सिंह छाजेड़, श्री भूषण खत्री, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष श्री सज्जन बोथरा, प्रवास व्यवस्था समिति के मंत्री श्री पारस जैन ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों में अपनी प्रस्तुति दी।

गुरु गोविंदसिंहजी की जन्मस्थली में गुरुवर महाश्रमण

०१ अप्रेल। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर आज प्रातः सिखों के पांच तख्तों में से एक 'हरमिन्दर साहिब' में पधारे। सिख मान्यतानुसार गुरुद्वारे का यह स्थान सिखों के दसवें गुरु गोविंदसिंहजी का स्थान है। सन् १६६६ में उनका जन्म इसी स्थान पर स्थित श्री सालिसराय जौहरी के घर में हुआ। श्री सालिसराय जैन थे। गुरु गोविंदसिंहजी के जीवन के प्रारंभिक वर्ष यहीं व्यतीत हुए। कालांतर में श्री जौहरी ने सिख समाज को अपना काफी स्थान सौंप दिया। जिस पर ये विशाल गुरुद्वारा निर्मित है। शेष स्थान में श्री जौहरी ने जैन मंदिर का निर्माण करवाया। गुरुद्वारा और जैन मंदिर परस्पर बिलकुल सटे हुए हैं। गुरु गोविंदसिंह की जन्म जयंती अर्थात प्रकाशोत्सव के समय यहां पर्यटकों की भारी भीड़ उमड़ती है। कुछ माह पूर्व ही गोविंदसिंहजी के ३५०वीं जन्म जयंती राज्य सरकार द्वारा व्यापक स्तर पर मनाई गई। उस समय आयोजित कार्यक्रमों की प्रशंसा आज भी जनता के मुख से यदा-कदा सुनी जा सकती है। पूज्यप्रवर ने गुरुद्वारे का अवलोकन करने के पश्चात परिपार्श्वस्थ जैन मंदिर का भी अवलोकन किया।

प्रवास स्थल में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के प्रेरक वक्तव्य हुए। पूज्यप्रवर के पदार्पण के उपरान्त मुख्यमुनिश्री और साध्वीवर्याजी के अभिभाषण हुए।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में गलती की पुनरावृत्ति से बचने की तथा यथापेक्षा समुचित परिष्कार की प्रेरणा प्रदान की।

पटना सिटी कन्या मंडल ने गीत का संगान कर पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती प्रभा गोलछा, प्रवास व्यवस्था समिति के मंत्री श्री पारस जैन और श्रीमती जतनदेवी कोठारी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

शहर में रहें या गांव में, साधनाशील रहें

०२ अप्रेल। परम पूज्य आचार्यप्रवर आज प्रातः प्रवास स्थल से करीब डेढ़ किलोमीटर दूर स्थित

दादाबाड़ी परिसर में पधारे। जैन संघ के अध्यक्ष श्री प्रदीप जैन आदि ने आचार्यप्रवर का स्वागत किया। पूज्यप्रवर ने परिसर का अवलोकन करने के उपरान्त संक्षिप्त कार्यक्रम में अपना पावन संबोध प्रदान किया। श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ की ओर से आचार्यप्रवर के अभिनंदन में अभिव्यक्ति दी गई।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के उद्‌बोधन हुए। आचार्यप्रवर के पदार्पण के उपरान्त साध्वीवर्याजी का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में मोक्ष की दिशा में बढ़ते रहने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'भगवान महावीर से जुड़ी हुई यह बिहार की भूमि और उसमें भी यह पाटलिपुत्र क्षेत्र जो स्थूलभ्रद से भी जुड़ी हुई है। स्थूलभ्रद जैन शासन के एक विशिष्ट व्यक्तित्व थे। उनके जीवन पर दृष्टिपात करने पर ऐसा लगता है कि उनमें कितनी साधना रही होगी और उनमें कुछ त्रुटि भी रही। अनुमान है कि वे एक मेधावी विद्यार्थी थे। उनकी आशातना न हो पर इतिहास बताता है--उनके विद्यादाता भद्रबाहु स्वामी को लगा कि स्थूलभद्र की अर्हता में कुछ कमी है। वे उन्हें दस पूर्वों का ज्ञान दे चुके थे, किन्तु स्थूलभ्रद ने विद्या का अवांछनीय उपयोग कर लिया। अपनी बहनों को उन्होंने अपनी साधना का प्रभाव दिखाने के लिए सिंह का रूप बना लिया। उस समय आचार्य भद्रबाहु स्वामी को लगा कि यह विद्या के योग्य नहीं है। उन्होंने स्थूलभ्रद को ज्ञान देने से मना कर दिया। अनुनय-विनय किया गया, क्षमायाचना की गई, किन्तु भद्रबाहु स्वामी ने शेष चार पूर्वों का सूत्रात्मक बोध दिया, परन्तु अर्थात्मक बोध नहीं दिया। स्थूलभ्रद के जीवन का उज्ज्वल पक्ष भी है। उन्होंने किस प्रकार दस पूर्वों का ज्ञान ग्रहण कर लिया और अंतिम चार पूर्वों का सूत्रात्मक ज्ञान भी कर लिया। उनकी साधना भी विशिष्ट रही। बृहत् मंगलपाठ में उनका नाम लिया जाता है।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी ।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैनधर्मोस्तु मंगलम् ।।

अभी हम लोग पटना सिटी में हैं। शहर में रहें या गांव में गृहस्थ जीवन में भी कुछ साधना रहनी चाहिए। आदमी को अपना कुछ समय जप, ध्यान आदि साधना में लगाना चाहिए। जैन लोगों के लिए सामायिक करणीय होती है। कल शनिवार था। कितने लोगों ने कल सायं सात से आठ बजे के बीच सामायिक की होगी। सामायिक साधना का सुन्दर प्रयोग है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी श्रावक-श्राविकाओं को शनिवार को सायं सात बजे से आठ बजे के बीच यथासंभव सामायिक का प्रयोग करना चाहिए। प्रतिदिन कुछ समय यथासुविधा कालबद्ध साधना में लगाना चाहिए। आदमी को आचरणों में भी निर्मलता रखने का प्रयास करना चाहिए। मन की निर्मलता होगी तो आचरणों में भी निर्मलता रह सकेगी और मन निर्मल रहेगा तो आनंद भी मिल सकेगा।'

विशिष्ट लोगों द्वारा श्रद्धाभिव्यक्ति

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित बिहार सरकार की लोक लेखा समिति के सभापति श्री नंदकिशोर यादव ने कहा--'आचार्यश्री का आगमन हम सबके लिए बहुत उत्साहवर्धक है। हम बिहारवासी सचमुच सौभाग्यशाली हैं। इस धरती का कण-कण भगवान महावीर से धन्य बना हुआ है। आचार्यश्री! आपने इस पावन भूमि पर चरण रखकर हमें कृतार्थ किया है। मैं स्थानीय विधायक होने के नाते आपका अभिनन्दन करता हूं। मैंने आपकी विशिष्टता, कर्मठता आदि की गाथाएं सुनी हैं। मैंने थोड़ी देर आपकी वाणी सुनी, आपने जीवन के गूढ़ रहस्यों की कितने सरल शब्दों में व्याख्या कर दी। आपका मार्गदर्शन हमें प्राप्त हुआ, हम तो उसका अनुसरण करेंगे ही, पूरा बिहार उस मार्ग पर चलेगा, ऐसा विश्वास दिलाता हूं। आपने हमें अपने सान्निध्य का सौभाग्य दिया, इसके लिए मैं आपके चरणों में आभार निवेदित करता हूं।'

राज्यसभा के पूर्व सांसद श्री राजनीति प्रसाद ने कहा--'आचार्यश्री! मैं आपके दर्शन कर और आपके

विचारों को सुनकर धन्य हुआ। आपने एक करोड़ से ज्यादा लोगों को नशामुक्त कर दिया। आपकी अनुयायी बनकर बिहार सरकार ने शराब बंद कर दिया। आपका संदेश समाज के लिए बहुत लाभदायक है और वह अनेक समस्याओं का समाधायक भी है। आप इसी प्रकार समाज और राष्ट्र को राह बताते रहें।'

बिहार विधानसभा में प्रतिपक्ष नेता श्री प्रेमकुमारजी ने कहा--'बिहार की पावन धरती और पटना सिटी में आचार्यश्री महाश्रमणजी का स्वागत-अभिनन्दन करता हूं। यह जानकार बहुत प्रसन्नता हुई कि समाज में नई जागृति लाने के लिए आचार्यश्री सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश देते हुए हजारों किलोमीटर की अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। आने वाले समय में निश्चित रूप से आचार्यश्री की इस यात्रा का सकारात्मक फल हम बिहारवासियों को मिलेगा और देश में भी बहुत बड़ा परिवर्तन होगा। मानव जाति के लिए यह यात्रा मील का पत्थर साबित होगी। मुझे आपके दर्शन कर आंतरिक आह्लाद का अनुभव हो रहा है। हम सभी आपके बताए मार्ग पर चलकर बिहार को बेहतर बना सकते हैं और राष्ट्र का उत्थान भी कर सकते हैं।'

बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी ने कहा--'बिहार की धरती भगवान महावीर और भगवान बुद्ध की धरती है और पटना सिटी गुरु गोविन्दसिंहजी महाराज की धरती है। इस देश में बिहार अकेला राज्य है कि जिसे तीन-तीन धर्मों के पथप्रदर्शकों की धरती कहलाने का सौभाग्य प्राप्त है। हम सबका सौभाग्य है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी महाराज हम सबके बीच आए हैं। मैं सबसे अपील करूंगा कि आचार्यश्री के दर्शन करने और प्रवचन सुनने के साथ-साथ अपने जीवन में परिवर्तन लाने का प्रयास करें। मैं आचार्यश्री के चरणों में शीश झुकाते हुए उनका बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूं।'

शासनश्री मुनि पानमलजी की स्मृति सभा

कार्यक्रम में गत २६ मार्च २०१७ को भीनासर में कालधर्म को प्राप्त स्व. शासनश्री मुनिश्री पानमलजी की स्मृतिसभा का उपक्रम रहा। इस दौरान मुनि हितेन्द्रकुमारजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि गौरवकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि कीर्तिकुमारजी, मुनि कोमलकुमारजी, मुनि मृदुकुमारजी, शासन गौरव साध्वी कल्पलताजी और शासनश्री साध्वी जिनप्रभाजी ने उनकी विशेषताओं और उनसे जुड़े संस्मरणों को प्रस्तुति दी।

मुख्यमुनिश्री ने कहा--'आज मुनिश्री पानमलजी स्वामी की स्मृति सभा रखी गई है। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने उन्हें 'शासनश्री' के रूप में संबोधित किया। उनका गुरुकुलवास में भी लंबे समय तक प्रवास रहा। मेरे प्रति भी उनका विशेष वात्सल्य भाव था। वे बच्चों के प्रति विशेष लगाव रखते और उन्हें देव, गुरु और धर्म के प्रति निष्ठा का संस्कार देने का प्रयास करते। धर्मसंघ के प्रति उनमें विशेष भक्ति का भाव देखने को मिला। उन्होंने लंबे काल तक धर्मसंघ की सेवा की। उनकी आत्मा शीघ्र मोक्षश्री का वरण करे, मंगलकामना।'

साध्वीप्रमुखाजी ने कहा--'मुनिश्री पानमलजी स्वामी का प्रयाण हो गया। आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रति उनका समर्पण भाव अद्भुत था। वे हमारे धर्मसंघ के विशिष्ट मुनि थे। वे बच्चों के लिए अपना विशेष समय लगाते। उन्हें बहुत निकटता से समझाते और सत्संस्कार देते। आचार्यप्रवर ने भी बचपन में उनके पास कुछ सीखा। उनके जीवन की अनेक घटनाएं मिल जाएंगी कि वे किस प्रकार बच्चों में अच्छे संस्कार भरने का प्रयास करते। उनकी सेवा भी विलक्षण थी। हमने देखा मुनिश्री दुलीचंदजी स्वामी 'दिनकर' की उन्होंने किस प्रकार जागरूकता के साथ सेवा की। वे जब गुरुकुलवास में रहते तो गुरुदेव की सेवा में भी उपस्थित रहते। इन वर्षों में अस्वस्थता के कारण वे कमजोर हो गए। फिर भी वे लोगों को संभालने में अपना समय लगाते। इस प्रकार उनकी समर्पण भावना, बच्चों को संस्कारी बनाने की भावना और सेवा भावना अद्भुत थी। मुनिश्री बालचंदजी स्वामी के वे सहोदर थे। दोनों भाइयों में गुरुसेवा की भावना प्रबलता लिए हुए थी। उनकी विशेषताएं अन्य साधु और साध्वियों में सक्रान्त होती रहें। हम आज उनकी आत्मा के उत्तरोत्तर आध्यात्मिक आरोहण की कामना करते हैं।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने उनके विषय में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा--'प्राप्त जानकारी के अनुसार शासनश्री मुनिश्री पानमलजी स्वामी संसारपक्ष में गंगाशहर के सेठिया परिवार से संबद्ध थे। उन्होंने लगभग पन्द्रह वर्ष की किशोरावस्था में विक्रम संवत् २००३ में आचार्य तुलसी के मुखकमल से मुनि दीक्षा स्वीकार की। वे मुनिश्री बालचंदजी स्वामी (गंगाशहर) के अनुज थे। विक्रम संवत् २०५५ में उन्हें आचार्य महाप्रज्ञजी द्वारा अग्रगण्य नियुक्त किया गया। मैंने उन्हें शासनश्री के रूप में अलंकृत किया। दक्षिण भारत की यात्रा करने वाले संतों के प्रथम सिंघाड़े के वे भी एक सदस्य थे। उन्होंने कुछ तपस्या भी की। बालकों में संस्कार निर्माण उनकी रुचि का विषय था। कई वैरागियों के निर्माण में उनका भी योग रहा। स्वाध्याय और जप में भी वे अपना समय नियोजित करते थे। गत दो वर्षों से वे अस्वस्थ थे। विक्रम संवत् २०७४ की चैत्र शुक्ला द्वितीया को भीनासर में सायं लगभग ६.३५ बजे वे कालधर्म को प्राप्त हो गए। मुनि गिरीशजी और मुनि विनीतजी कई वर्षों से उनके सहवर्ती थे।

मैं भी बचपन में मुनिश्री पानमलजी स्वामी के संपर्क में रहा। मैं जब साधुओं के संपर्क में आया, संभवतः मेरा प्रायः प्रथम संपर्क उनसे अथवा वे जिस सिंघाड़े में थे, उसके संतों से हुआ। मुझे सिखाने में उनका उपकार भाव था। मैं उनके पास बैठा रहता था। मैं संसारपक्षीय घर से काफी दूरी पार कर सरदारशहर में श्री स्वरूपचंदजी दूगड़ के मकान में उनके पास जाता, वहां रहता। कभी वे गधैयाजी के नोहरे में विराजते तो मैं वहां भी जाता। उस समय मुनिश्री पानमलजी स्वामी ने मुझे साधु बनने के लिए प्रेरणा भी दी। मुझे बचपन में धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ाने में उनकी प्रेरणा भी योगभूत रही है, ऐसा मुझे लगता है। संघ और संघपति के प्रति उनमें श्रद्धा और सम्मान का भाव देखने को मिला। मैं उनके प्रति बहुत ही अहोभाव व्यक्त करता हूं।

किसी चारित्रात्मा के प्रयाण के बाद चार लोगस्स के ध्यान की हमारी सामान्य विधि है। आम तौर से वह ध्यान बैठे-बैठे किया जाता है। मैं व्यक्तिगत रूप में मुनिश्री पानमलजी स्वामी की स्मृति में खड़े-खड़े ध्यान करना चाहूंगा। शेष सभी बैठे भी रह सकते हैं और खड़े हों तो भी आपत्ति नहीं।'

आचार्यप्रवर ध्यान करने के लिए अपने पट्ट से उतर कर खड़े हुए तो साधु-साध्वियां, समणियां और श्रावक-श्राविकाएं भी खड़े हो गए। चतुर्विध धर्मसंघ ने उनकी स्मृति में खड़े-खड़े चार लोगस्स का ध्यान किया। अपने यत्‌किंचत् उपकारी मुनिश्री के प्रति आचार्यप्रवर का विनयभाव देखकर उपस्थित जनता अभिभूत थी।

पूज्यप्रवर ने ध्यान के उपरान्त कहा--'मैं शासनश्री मुनिश्री पानमलजी स्वामी के प्रति व्यक्तिगत रूप में बहुत-बहुत सम्मान का भाव व्यक्त करता हूं और संघीय दृष्टि से उनके प्रति हमारी मंगलकामना। उनकी आत्मा ऊर्ध्वगमन को प्राप्त करे, शुभाशंसा।'

शासन गौरव मुनि ताराचंदजी की आत्मकथा 'मेरी यात्रा (वीतरागता की ओर)' प्रकाशक संस्था जैन विश्वभारती की ओर से पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की गई। श्री दिलीप सरावगी ने इस संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए।

पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'मेरी यात्रा' पुस्तक लोकार्पित हुई है। मुनिश्री ताराचंदजी स्वामी हमारे धर्मसंघ में परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के समय में 'शासन गौरव' सम्मान से सम्मानित हुए थे। उनकी योग-ध्यान में रुचि रही है। उन्होंने पहले पूर्वांचल, पूर्वोत्तर व दक्षिण की यात्राएं की थीं। इन वर्षों में उनकी ज्यादा रुचि साधना की थी तो मैंने भी उन्हें इस संदर्भ में व्यवस्थात्मक सहयोग दिया। साधना के संदर्भ में वे अभी सरदारशहर में रह रहे हैं। उनकी आत्मकथा 'मेरी यात्रा' से साधना में रुचि रखने वाले लोगों को अच्छा मार्गदर्शन मिल सके तथा साधना की दृष्टि से यह पुस्तक दिशा-निर्देश दे सकने वाली सिद्ध हो, उनकी साधना और आगे बढ़े, शुभाशंसा।'

आज भारत सरकार के ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री रामकृपाल यादव तथा पटना जिला के जिलाधीश श्री संजयकुमार अग्रवाल ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन पथदर्शन प्रदान किया। बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष श्री रामचंद्र पूर्वे ने आज सपरिवार पूज्यप्रवर के दर्शन किए। उन्होंने पूज्यप्रवर के समक्ष अपनी धर्मपत्नी, पुत्रों और पौत्र-पौत्रियों आदि का परिचय दिया। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन संबोध प्रदान किया। पूर्वे परिवार ने पूज्यप्रवर से आजीवन नशामुक्त रहने का संकल्प भी स्वीकार किया। पूरे पूर्वे परिवार का आचार्यप्रवर के प्रति भक्ति का भाव उदाहरणीय है। पटना सिटी के पार्षद श्री बलराम चौधरी, श्रीमती तरुणा राय, श्री शिव महतो, पूर्व उपमहापौर संतोष मेहता तथा मुन्ना जायसवाल ने पूज्यप्रवर के सामूहिक दर्शन किए। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन पाथेय प्रदान किया।

पटना से प्रस्थान

०३ अप्रेल। पटना सिटी के त्रिदिवसीय प्रवास के पश्चात परमाराध्य आचार्यप्रवर ने डुमरी गांव की ओर प्रस्थान किया। पाटलिपुत्र परिषद के महासचिव श्री संजीव यादव की प्रार्थना पर आचार्यप्रवर प्रवास स्थल के समीपस्थ स्टेडियम की ओर पधारे। स्टेडियम में बिछी सचित मिट्टी के कारण आचार्यप्रवर भीतर नहीं पधार सके। श्री संजीव यादव ने आचार्यप्रवर के स्वागत में भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने संक्षिप्त पावन पाथेय प्रदान किया। श्री यादव ने स्टेडियम में लगी महात्मा गांधी की प्रतिमा की ओर संकेत करते हुए पूज्यप्रवर से निवेदन किया--आचार्यश्री! वह प्रतिमा खंडित हो गई है। आप सरकार से कहें कि नई प्रतिमा लगाए। आचार्यप्रवर ने उनसे कहा--'आप नई मूर्ति की बात कह रहे हैं। हम तो यह कहते हैं कि गांधीजी के विचारों के अनुरूप अहिंसा मन में मूर्तिमान रहे।'

'छठ पूजा' बिहार का सबसे बड़ा त्यौहार माना जाता है। कार्तिक और चैत्र मास के शुक्लपक्ष की षष्ठी को मनाए जाने वाले इस त्यौहार के दिन और उसके आसपास के दिनों में पूरे बिहार में अलग ही माहौल रहता है। जनता सूर्य को अर्घ्य देकर 'छठ पूजा' करती है। इन दिनों लोग हर प्रकार के अपराध से बचने का प्रयत्न करते हैं और कहीं भी कचरा बिखेरने को भी वे गलत मानते हैं। इस प्रकार इस त्यौहार के दिनों में बिहारी जनता में अनुशासन सहजतया सधा हुआ देखा जा सकता है।

कल चैत्र शुक्ला षष्ठी थी। लोगों ने सूर्य को अर्घ्य अर्पित कर 'छठ पूजा' की। परंपरानुसार आज प्रातः सूर्योदय के उपरान्त पुनः अर्घ्य देना था। 'छठ पूजा' के लिए जाने वाले लोगों के लिए लोगों ने यत्र-तत्र पेय आदि की व्यवस्था कर रखी थी। जगह-जगह लगे 'डीजे' से भक्तिपूर्ण गीत गुंजायमान हो रहे थे।

आज उदित होने के कुछ समय उपरान्त ही सूर्य ने प्रखरता धारण कर ली, जो क्रमशः बढ़ती जा रही थी। गंतव्य की करीब आधी दूरी तय होने तक गर्मी अपने पूरे रंग में छा गई। फिर भी पूज्यप्रवर का समता भाव अडोल था।

करीब ११ किलोमीटर का विहार कर आचार्यप्रवर डुमरी गांव स्थित उत्क्रमित मध्य विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यही हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में आत्मानुशासन की महत्ता विवेचित करते हुए उसके लिए शरीरानुशासन, वचोनुशासन, मनोनुशासन और इन्द्रियानुशासन को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने समुपस्थित ग्राम्यजनों को अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान कर संकल्पत्रयी स्वीकार करवाई। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री सुरेन्द्रजी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी श्रद्धासिक्त भावाभिव्यक्ति दी।

आज दिन-रात्रि में ग्रामीण दर्शनार्थियों के आने का तांता लगा रहा। रात्रिकालीन कार्यक्रम में पधारकर आचार्यप्रवर ने समुपस्थित ग्रामवासियों को पावन संबोध प्रदान किया।

बिहार में समझी जा सकती है आगम की बात

०४ अप्रेल। परम पावन आचार्यप्रवर प्रातः डुमरी से दनियावां की ओर प्रस्थित हुए। कल विहार के दौरान प्रखर रूप में आतप बरसाने वाला सूरज आज बादलों की ओट में नदारद था। कल की गर्मी से आहत लोगों के लिए आज की ठंडी हवा राहत का अनुभव कराने वाली थी। मार्गवर्ती फतुआडूंगरी के ग्रामीणों को पूज्यप्रवर के दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मार्ग के परिपार्श्व में स्थित सघन आम्र वृक्षों पर अब छोटी-छोटी केरियां नजर आने लगी हैं। पूज्यप्रवर आज जिस मार्ग से गतिमान थे उस पर निर्माण कार्य चल रहा था। वाहनों आदि के लिए यत्र-तत्र वैकल्पिक रूप में कच्चा रास्ता बना हुआ था। हवा के कारण उड़ने वाली मिट्टी कच्चे मार्ग पर प्रतिकूल परिस्थिति अवश्य उत्पन्न कर रही थी, किन्तु महातपस्वी आचार्यप्रवर के समता भाव को खंडित करने में वह अक्षम थी। ११ किलोमीटर का विहार कर आचार्यप्रवर दनियावां में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में वीतरागता की साधना की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'बिहार प्रान्त की यात्रा करने से आगम की कई बातों और भगवान महावीर के जीवन को समझने में स्थूल रूप में कुछ सुविधा हो सकती है। आगमों में आम्रवन की बात आती है। यहां आम्रवन देखने को मिल सकते हैं। आगमों में मच्छर दंश को परीषह कहा गया। यहां पता चल सकता है कि कितने बड़े-बड़े मच्छर होते हैं और उनके दंश कितने तीक्ष्ण होते हैं।'

आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस

०५ अप्रेल। चैत्र शुक्ला नवमी। आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः दनियावां से माधोपुर की ओर प्रस्थित हुए। गत रात्रि से बह रही तेज हवा आज प्रातः भी यथावत जारी थी। आकाश मेघाच्छन बना हुआ था। इस कारण वातावरण में शीतलता व्याप्त थी। विहार के दौरान हरिनगर, फरीदपुर और नगरनौसा गांव के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन एवं पावन आशीष से लाभान्वित हुए। राजकुमार मलिक नामक ग्रामीण ने पूज्यप्रवर के सामने अपना दुःख प्रकट किया तो आचार्यप्रवर ने उसे मंत्र जप का प्रयोग बताया। आचार्यप्रवर ने विहार के मध्य पटना जिले की सीमा को अतिक्रांत कर नालंदा जिले की सीमा में प्रवेश किया। सड़क पर यत्र-तत्र निर्मीयमाण पुलों के कारण आचार्यप्रवर अनेक स्थानों पर वैकल्पिक कच्चे मार्ग से पधारे। तीनी लोकीपुर स्थित आदर्श निकेतन के शिक्षक और विद्यार्थियों ने मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें संक्षिप्त संबोध भी प्रदान किया। करीब १६.० किलोमीटर का विहार कर पूज्यप्रवर माधोपुर स्थित राजेन्द्र मेमोरियल स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यही हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आज चैत्र शुक्ला नवमी है। भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस है। भिक्षु स्वामी जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम गुरु थे। उन्होंने आज के दिन रघुनाथजी महाराज की परंपरा से अभिनिष्क्रमण किया था। घर से अभिनिष्क्रमण वे पहले ही कर चुके थे। आज के दिन बगड़ी से उन्होंने अभिनिष्क्रमण किया था। अभिनिष्क्रमण अचानक नहीं किया। उसकी पृष्ठभूमि भी रही। संत भीखणजी, जिन्हें हम भिक्षु स्वामी कहते हैं, के पास बुद्धि का बल भी था। उन्होंने गुरु और संघ को भी छोड़ दिया। जहां आत्मशुद्धि की बात हो, वहां संप्रदाय का मोह नहीं रखना चाहिए। संत भीखणजी ने मानों संप्रदाय और गुरु दोनों का मोह छोड़ दिया और मानों जानबूझ कर संघर्षों को मोल ले लिया। उन्होंने किस प्रकार विरोधों को झेला। केवल लोगों ने ही नहीं, मौसम ने भी मानों अवरोध पैदा किया। ऐसी प्रतिकूल स्थिति में वे श्मशान में रह गए। उनके गुरु रघुनाथजी महाराज उन्हें मनाने के लिए वहां भी

आए और इतिहास बताता है कि मनाते-मनाते उनकी आंखों में पानी आ गया, लेकिन संत भीखणजी विचलित नहीं हुए। उनके सामने भोजन व स्थान की समस्या भी आई, परन्तु अवरोधों-विरोधों में वे किस प्रकार बढ़ते रहे। विरोधों और संघर्षों में भी घुटने न टेकना साहस का कार्य होता है। संत भीखणजी ने एक सक्रिय जीवन जीया। पुरुषार्थ का जीवन जीया।

एक ऐसा पंथ निर्मित हो गया, जिसे आज तेरापंथ के नाम से जाना जाता है। पंथ बनाना कठिन होता है। उस पर चलना और ठीक-ठाक करना फिर भी आसान हो सकता है। आचार्य भिक्षु ने एक राजमार्ग बना दिया। जिसके हम पथिक बने हुए हैं। आज तेरापंथ जिस रूप में हैं, मानों नंदनवन बना हुआ है। हम भिक्षु स्वामी का स्मरण करते हैं। जिनका इस नंदनवन के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

विरोधों में भी आचार्य भिक्षु अपने भाग्यबल, पुरुषार्थबल, बुद्धिबल और समताबल से आगे बढ़ते रहे। वे मानों कोई ऐसे विशिष्ट पुरुष थे, जिनमें प्रज्ञा की गहराई और आचार की ऊंचाई थी। उन्होंने अपने ढंग से शिथिलाचार पर प्रहार किया। उनका अपना बुद्धि वैभव था। उससे वे जनता को समझाने का प्रयास भी करते। आज मैं तेरापंथ के प्रणेता, परमश्रद्धेय आचार्य भिक्षु के प्रति अत्यन्त सम्मान के साथ श्रद्धा अभिव्यक्त कर रहा हूं।

समुपस्थित ग्रामीणों को आचार्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान कर संकल्पत्रयी स्वीकार करवाई।

माधोपुर के सरपंच श्री बलराजजी ने कहा--'मैं बाबा (आचार्यश्री महाश्रमण) को नमन करते हुए हमारे गांव में उनका बहुत-बहुत स्वागत करता हूं। हम लोग आज बहुत आनंद की अनुभूति कर रहे हैं। बाबा से लिए संकल्पों को निभाकर हम अपना जीवन अच्छा बना सकते हैं और समाज को भी अच्छा बना सकते हैं। माधोपुर की जनता हमेशा बाबा की आभारी रहेगी।'

आज भी सैंकड़ों ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन से लाभान्वित हुए। रात्रिकालीन कार्यक्रम में उपस्थित ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर से पावन प्रेरणा प्राप्त की।

कल पर न छोड़ें आज करणीय कार्य

०६ अप्रेल। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः माधोपुर से परीऔना की ओर प्रस्थान किया। आज भी सूरज बादलों की ओट में अदृश्य था। हल्की ठंडी हवा बह रही थी। इस कारण मौसम सुहावना रूप लिए हुए था। सूर्य बादलों पर विजय पाने का असफल प्रयास करता हुआ यदा-कदा दृष्टिगोचर हो रहा था। कनक की लहलहाती फसल का सुनहरा रंग उसके पकने का द्योतक था। कृषक अपनी दीर्घकालीन मेहनत का फल पाने की तैयारी कर रहे थे। मार्गवर्ती नूरसर के अनेकानेक ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। परीऔना के संरपच श्री सुभाष कुमार कदार ने पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। १३.७ किलोमीटर का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर परीऔना में स्थित मध्य विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यही हुआ।

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने मंगल प्रवचन में धर्म के संदर्भ में आज करणीय को आलस्यवश कल पर न छोड़ने की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा की अवगति और प्रेरणा प्राप्त कर परीऔनावासियों ने संकल्पत्रयी स्वीकार की। परीऔना मध्य विद्यालय के शिक्षक श्री धर्मेन्द्रकुमार ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

बिहार के राज्यपाल के साथ आचार्यप्रवर का वार्तालाप

२९ मार्च को बिहार के राज्यपाल श्री रामनाथ कोविंद पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल (पटना जंक्शन के

कंकड़बाग स्थित अवसर हॉल) में पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। उन्होंने प्रवास कक्ष में आते ही पूज्यप्रवर को सविनय वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यप्रवर का उनके साथ लंबे वार्तालाप का क्रम चला। वार्तालाप के कुछ अंश यहां प्रकाशित किए जा रहे हैं--

आचार्यप्रवर--'आपने कल जो दो किताबें दीं थीं, उन्हें अभी कुछ देखना शुरू किया था।'

राज्यपाल--'आप जो जानते हैं, उनमें वही लिखा हुआ है। वैसे पुस्तकें होती ही इसलिए ही हैं कि जब समय मिला या जब चाहो, तब देख लो।'

आचार्यप्रवर--'हमारे यहां भी काफी साहित्य प्रकाशित हुआ है। जैन धर्म में दो परंपराएं हैं--दिगम्बर और श्वेताम्बर। श्वेताम्बर में भी हमारा संप्रदाय तेरापंथ है। इस धर्मसंघ को शुरू हुए २५६ वर्ष से अधिक समय हो गया।'

राज्यपाल--'हां, इसकी मुझे जानकारी है।'

आचार्यप्रवर--'जैन शास्त्रों को आगम कहा जाता है। हमारे यहां आगमों की संख्या ३२ मानी गई है। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण साहित्य है। इनका हिन्दी अनुवाद, संस्कृत छाया और व्याख्या आदि के रूप में संपादन कार्य हमारे यहां वर्षों से चल रहा है। इनकी एक सिरीज में आगमों के केवल का मूल पाठ प्रकाशित हुआ है। दूसरी किस्म की सिरीज में अनुवाद, संस्कृत छाया, व्याख्या आदि हैं। इसके भी कई ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। तीसरी किस्म की सिरीज के अंतर्गत आगमों पर प्राकृत और संस्कृत में लिखित व्याख्या ग्रंथों के अनुवाद, व्याख्या आदि के रूप में संपादन कार्य चल रहा है। इसके भी कुछ ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं।' (पूज्यप्रवर ने तीनों सीरिज के कई ग्रंथ राज्यपाल महोदय को दिखाए।)

राज्यपाल--(आश्चर्य के साथ) 'यात्रा में भी यह कार्य चलता है।'

आचार्यप्रवर--'हां, यात्रा में भी यथानुकूलता यह कार्य चलता रहता है।' (आचार्यप्रवर ने उन्हें 'भगवती', 'भिक्षु आगम विषयकोष' और 'आत्मा का दर्शन' के विषय में भी जानकारी प्रदान की।)

राज्यपाल--'इसके लिए तो आपकी पूरी टीम होगी।' उसके बिना तो इतना बड़ा कार्य कैसे हो सकता है।'

आचार्यप्रवर--हां, कई साधु-साध्वियां भी इस कार्य में नियोजित हैं। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के समय विक्रम संवत् २०१२ से यह कार्य चल रहा है। परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी तो इस कार्य में विशेष रूप से लगे रहते थे। आज भी यह कार्य चल रहा है। मैं भी इसमें अपना समय लगाया करता हूं।'

राज्यपाल--'यह बहुत ही अच्छा कार्य है, महान कार्य है।'

आचार्यप्रवर--'आगमों के सिवाय अन्य साहित्य भी विभिन्न विधाओं में प्रकाशित हुआ है।' (राज्यपाल महोदय को तेरापंथ धर्मसंघ की कई पुस्तकें भेंट की गईं।)

राज्यपाल--'मैं इन्हें पढ़ने का प्रयत्न करूंगा।'

आचार्यप्रवर--'साहित्य के सिवाय हमारे यहां दूसरा कार्य अणुव्रत का भी चलता है। जिसकी चर्चा कल के कार्यक्रम में हुई थी। तीसरा कार्य है-प्रेक्षाध्यान। राग-द्वेष मुक्त रहकर ध्यान के द्वारा खुद को जानने की साधना प्रेक्षाध्यान है। चौथा कार्य है-जीवन-विज्ञान। विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ अच्छे संस्कारों का भी विकास हो। इस दृष्टि से जीवन-विज्ञान के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रकार हमारे यहां चार कार्यक्रम विशेष रूप से चलते हैं।'

राज्यपाल--'आचार्यश्री! मेरी एक जिज्ञासा है कि आपके संपर्क में आने वाले लोगों की कई श्रेणियां होती हैं। कुछ लोग परंपरागत रूप से आपके अनुयायी होते हैं। आपने कल तीन संकल्प कराए। जो उनका अनुपालन कर रहे हैं, उनका जीवन स्तर कुछ उन्नत बन गया। उनके लिए आगे क्या है? मोक्ष पथ पर आगे बढ़ने

का मार्ग क्या है? क्योंकि मोक्ष तक पहुंचने में कई जन्म लगेंगे। इस जन्म में मोक्ष को प्राप्त नहीं किया जा सकता, किन्तु उसे निकट तो कर ही सकते हैं। आप मुझे इसका रास्ता बताएं।'

आचार्यप्रवर--'जैनेतर लोगों को हम यथावसर कुछ बातें सामान्य रूप में बता देते हैं। जैसे-सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। उन्हें ग्यारह अणुव्रतों की बात भी बताई जा सकती है। अणुव्रत के अंतर्गत वर्गीय अणुव्रत भी है। अलग-अलग क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों के लिए अलग-अलग नियम बने हुए हैं।

दूसरी बात है कि प्रेक्षाध्यान का आवासीय शिविर लगता है। आदमी एक शिविर में आ जाता है तो वह अंतर्मुखी बनने की दिशा में आगे बढ़ सकता है। निरंतर अभ्यास से वह स्वयं भी दक्ष बन सकता है। प्रेक्षाध्यान के द्वारा भी अपनी आत्मा का उत्थान किया जा सकता है।

तीसरी बात है कि एक उम्र के बाद आदमी को साधना का क्रम बनाना चाहिए। इसके लिए मैं साठ वर्ष से पार उम्र वाले व्यक्तियों को व्यक्तिशः कुछ संकल्प बताया करता हूं। (पूज्यवर ने राज्यपाल महोदय को अपने डायरी में लिखी कुछ बातें पढ़कर सुनाईं।)

मोक्ष के लिए मूल बात है--राग-द्वेष से मुक्त होना। ये पुर्नजन्म के मूल कारण हैं। वीतरागता जितनी बढ़ेगी, साधना उतनी ही आगे बढ़ सकेगी और मोक्ष की दिशा में गति भी हो सकेगी।'

राज्यपाल--'आचार्यश्री! आपने प्रेक्षाध्यान के विषय में बताया। मैं इस प्रक्रिया को जानना चाहता हूं। (पूज्यप्रवर ने उन्हें प्रेक्षाध्यान के विषय में कुछ विस्तारपूर्वक बताया। उन्हें प्रेक्षाध्यान से संबद्ध पुस्तकें और सीडी भी भेंट की गईं।)

राज्यपाल--'आचार्यश्री! आपका आगे का क्या कार्यक्रम है?' (आचार्यप्रवर ने उन्हें कोलकाता चतुर्मास और उसके बाद उड़ीसा और दक्षीण भारत की यात्रा की जानकारी प्रदान की।) राज्यपाल महोदय ने अपने जीवन से जुड़ी कुछ बातें पूज्यप्रवर के समक्ष प्रस्तुत कीं।'

राज्यपाल--(वार्तालाप के अंत में) मुझे आपके सान्निध्य में बैठकर बहुत अच्छा लगा। फिर कभी आना संभव हुआ तो कोशिश करूंगा।' (पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगलपाठ सुनाया।)

श्री लालूप्रसाद यादव से पूज्यप्रवर का वार्तालाप

३० मार्च को सायंकाल बिहार राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री तथा राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष श्री लालूप्रसाद यादव पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुए। उनके साथ राज्यसभा सांसद श्री शिवानंद तिवारी और बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष श्री रामचंद्र पूर्वे भी पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए। लालूजी आदि ने आते ही आचार्यप्रवर को करबद्ध वंदन किया। प्रस्तुत है उनके साथ पूज्यप्रवर की वार्ता के अंश--

श्री लालूप्रसाद--'बाबा! आप कितनी यात्रा कर चुके हैं?'

मुनिकुमारश्रमणजी--'आचार्यश्री करीब ४०,००० किलोमीटर की पदयात्रा कर चुके हैं।

श्री लालूप्रसाद--(आश्चर्य के साथ) '४०,००० किलोमीटर पैदल चल चुके! यह बहुत ही बड़ी बात है।'

आचार्यप्रवर--'हमने ६ नवम्बर २०१४ को दिल्ली से अहिंसा यात्रा का प्रारम्भ किया था। दिल्ली से उत्तरप्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार होते हुए नेपाल पहुंचे और वहां काठमांडू में भी हमारा जाना हुआ। फिर विराटनगर-नेपाल में चतुर्मास किया। वहां से बिहार, पश्चिम बंगाल होते हुए भूटान गए। फिर असम, नागालैंड, मेघालय में भी हमारा जाना हुआ। गुवाहाटी में चतुर्मास किया। अभी बिहार राज्य में भ्रमण कर रहे हैं। आगे कोलकाता जाना है। इस वर्ष का चतुर्मास वहां है। फिर उड़ीसा, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना आदि राज्यों में भी जाना है। सन् २०२० तक का हमारा कार्यक्रम बना हुआ है।

इस यात्रा के दौरान हम आम जनता में मुख्य रूप से तीन बातों का प्रचार कर रहे हैं--सद्भावना,

नैतिकता और नशामुक्ति। विभिन्न जातियों, वर्गों, संप्रदायों आदि के लोगों में परस्पर सद्भावना रहे, मैत्री भाव रहे। दंगा-फसाद, हिंसा आदि न हो। दूसरी बात है जो भी कार्य किया जाए, उसमें यथासंभव ईमानदारी रखने का प्रयास करना चाहिए। धोखाधड़ी नहीं करनी चाहिए। तीसरी बात है--नशा से मुक्त रहना चाहिए। इन तीन बातों का प्रचार करते हुए जनता को इनकी प्रतिज्ञाएं भी करवा रहे हैं।

श्री लालूप्रसाद--'आप बहुत महान कार्य कर रहे हैं। आज लोग सांप्रदायिक माहौल बनाने में लगे हैं। देश को दूसरी दिशा में ले जाने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसे में सद्भावना का संदेश बहुत प्रासंगिक और आवश्यक है। हम भी असांप्रदायिक ताकतों को मिलाने का प्रयत्न कर रहे हैं।'

आचार्यप्रवर--'हम लोग भगवान महावीर की परंपरा में जैन धर्म से हैं।'

श्री लालूप्रसाद--'हां, मुझे मालूम है। मैं मधुवन (सम्मेद शिखर) के सभी पहाड़ों पर गया हूं।'

श्री रामचन्द्र पूर्वे--'आचार्यश्री! जब राबड़ीजी मुख्यमंत्री थी, तब मैं शिक्षामंत्री था। उस समय बिहार के विद्यालयों में जीवन-विज्ञान लागू करने का निर्णय हुआ था, किन्तु सरकार बदल जाने से वह क्रियान्वित नहीं हो सका।'

श्री लालूप्रसाद--(प्रवास स्थल की ओर इशारा करते हुए) बाबा! 'यह भवन आप लोग का है क्या?'

आचार्यप्रवर--'यह हमारा भवन नहीं है। हम साधुओं का विधान है कि हमारे पास एक पैसा भी नहीं होना चाहिए, न मंदिर, न मठ, न और कोई आश्रम, मकान--कुछ भी हमारे मालिकाना में नहीं होना चाहिए। इसलिए जहां जाते हैं, वहां जो स्थान मिलता है, उसमें रह जाते हैं, फिर आगे बढ़ जाते हैं। चूंकि हम अकिंचन हैं, इसलिए हमारा यह भी नियम है कि जहां हमारे रहने का पैसा न लगे, वहां रहें।'

मुनि कुमारश्रमणजी--'आचार्यश्री तुलसी से जयप्रकाश बाबू का अच्छा संपर्क था।'

श्री शिवानंद तिवारी--'हां, वे तो आचार्य तुलसी के पास प्रतिवर्ष जाते और देश की समस्याओं के लिए उनसे विचार-विमर्श कर समाधान प्राप्त करते।'

आचार्यप्रवर ने उन्हें जैन धर्म के संप्रदायों, तेरापंथ तथा तेरापंथ की पूर्ववर्ती आचार्य परंपरा, साधुचर्या आदि की अवगति भी प्रदान की।

श्री लालूप्रसाद--(श्री शिवानंद तिवारी से) 'बाबा का स्वास्थ्य कितना अच्छा है। ४०,००० किलोमीटर पैदल चले हैं। फिर बीमारी कहां से आएगी।'

आचार्यप्रवर--(प्रेरणा प्रदान करते हुए) 'राजनीति एक सेवा का साधन है। राजनीति में नैतिक मूल्य बने रहें, यह ध्यातव्य है। संस्कृत में एक बात आती है--

राज्याधिकारं संप्राप्य, यः प्रजां नैव रंजति।
अजागलस्तनस्येव, तस्य जन्मनिरर्थकम्।।

राज्याधिकार को प्राप्त कर जो प्रजा की सेवा नहीं करता, उसका जन्म उसी प्रकार निरर्थक है, जिस प्रकार बकरी के गले का स्तन।

पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार मुख्यमुनिश्री ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

श्री लालूप्रसाद--(गीत सुनने के बाद) 'बाबा! हम भी यही तो चाहते हैं कि देश में असांप्रदायिक वातावरण रहे।' श्री रामचंद्र पूर्वे ने श्री लालूप्रसादजी को प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान की जानकारी देते हुए कहा जीवन-विज्ञान को बिहार राज्य के विद्यालयों में लागू करना चाहिए।

श्री लालूप्रसाद--'यह तो होना ही चाहिए। हमको इसकी पूरी जानकारी देना। हम आगे अवश्य बात करेंगे।'

श्री लालूप्रसाद को जब उनकी कुछ क्षणों पूर्व आचार्यश्री के दर्शन करते हुए की फोटो फ्रेम भेंट की

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/15-17 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2015-2017
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

गई तो वे अभिभूत होकर काफी देर तक उसे देखते रहे। फिर वे शिवानंद तिवारी से बोले--'ये लोग कितना अपडेट हैं। देखिए कितना अच्छा फ्रेम करके दिए हैं। प्रोफेशनल लोग भी इनसे पीछे हैं।'

श्री लालूप्रसाद--(विदा लेने से पूर्व आचार्यप्रवर से निवेदन करते हुए) 'बाबा! जब-जब इधर आना हो, हमें दर्शन जरूर दीजिएगा।' पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगलपाठ सुनाया।

श्री सुरेन्द्र सुराणा जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ में सम्मिलित

११ अप्रेल को रात्रिकालीन कार्यक्रम में श्री सुरेन्द्रकुमार सुराणा द्वारा प्रेषित दो पत्रों का क्रमशः श्री सुमतिचंद गोठी तथा श्री जतनलाल पुगलिया ने वाचन किया। वे दोनों पत्र इस प्रकार हैं--

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर! १०-०४-२०१७

तेरापंथ धर्मसंघ व संघपति पर मेरी अटूट श्रद्धा है। सिरियारी चुनाव, सन् २०१६ के संदर्भ में मेरे द्वारा हुई आशातना के लिए मैं आपसे क्षमायाचना करता हूं। आप महान हैं, कृपया आप अपने पुराने आदेश को निरस्त करें। आपका वरदहस्त मुझ पर बना रहे।

सुरेन्द्रकुमार सुराणा

मंत्री, १०-०४-२०१७

आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी

मैं आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देता हूं। इसे स्वीकार करें।

सुरेन्द्रकुमार सुराणा

पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में लिखित भाषा का वाचन किया जो इस प्रकार है--

अर्हम् ११-४-२०१७

१४ नवम्बर २०१६ के अपने निर्णय को वापिस लेते हुए मैं श्री सुरेन्द्रजी सुराणा को जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ में सम्मिलित करता हूं। अब उन्हें तेरापंथी श्रावक मानता हूं। हमारे धर्मसंघ के साधु-साध्वियां उनके हाथ से व उनके घर में गोचरी कर सकते हैं। समणश्रेणी को भी उनके हाथ से व उनके घर में भिक्षा ग्रहण का निषेध नहीं है। साधु-साध्वियां व समणश्रेणी उनसे बात भी कर सकते हैं। धर्मसंघ के श्रावक-श्राविकाएं धार्मिक संदर्भ में उन्हें अपना साधर्मिक मानें।

वीरायतन, राजगीर, बिहार प्रान्त **आचार्य महाश्रमण**

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री हंसराज बेताला, शुजागंज बाजार, पो.भागलपुर-८१२ ००१ (बिहार)
शिविर कार्यालय का मोबाइल नं. ७२५८०६६८७, ७२५८०६६५४५

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी